

# विजय नगर साम्राज्य

- ★ विजय नगर साम्राज्य की स्थापना **1386** ई० में **हरिहर एवं बुक्का** नामक दो भाइयों ने किया। इन दोनों को **M.B.T.** ने इस्लाम धर्म कबूल करवाया था और द० भारत को मिलने के लिए भेजा। जहाँ इनकी मुलाकात इनके **गुरु विद्यरण्य** से हुई। जिन्होंने इनकी सुहि करायी अथात् वापस हिन्दू धर्म में लाया।
- ★ इन्होंने द० भारत के क्षेत्र को जीतकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किया और अपने पिता सेवम के नाम पर रंगम वंश की स्थापना किया और **हम्पी (कनार्टक)** को अपनी राजधानी बनाया।

## संगम वंश

- ★ इस वंश का प्रथम शासक **हरिहर I** था। इसके दरबार में **सायान** नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने वेदों पर टिका (Command) पर लिखा।
- ★ हरिहर-I के बाद इसका छोटा भाई **बुक्का-I** शासक बना इसने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधी धारण किया। इसके समय कृष्ण एवं तुंगभद्रा नदी के बीच के **रायचूर** दोआब पर अधिकार के लिए बहमनी साम्राज्य से युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध 200 वर्षों तक चला और अन्ततः सफलता विजयनगर साम्राज्य को ही मिला।
- ★ इसके समक्ष बहमनी शासक **मु०-I** ने आक्रमण किया। इस आक्रमण में **बुक्का-I** पराजित हुआ।
- ☞ **देव राय-I** — इसने अपने सेना में तुर्क धनुर्धर को शामिल किया। इसने तुंगभद्रा नदी पर नहर बनाया ताकि सिंचाई हो सके। इसके समय बहमनी शासक **फिरोजशाह बहमन** ने आक्रमण किया। इसने **देवराय-I** को पराजित कर दिया। किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया।
- ★ देवराय-I ने अपनी सेना में **मुस्लिमों को भी** रखना प्रारम्भ किया इसके समय इटली यात्री **निकोलो डे काण्टी** भारत आया।
- ★ इसके बाद अगला शासक **देवराय-II** बना।
- ☞ **देव राय-II** — इसके समय में संगम वंश का **सर्वाधिक विकास हुआ**। यह संगम वंश का सबसे **प्रतापी शासक** था इसने **श्रीलंका** अभियान किया। इस प्रकार श्रीलंका अभियान करने वाला देवराय-II तीसरा शासक बन गया। [पहला राजाराज, दूसरा राजेन्द्र-II] वह अपनी सिंहासन के बगल में कुआन रखता था। देवराय-II को हाथी मारने का शौक था अतः इसे **गजवेदका** कहा जाता है।
- ★ इसी के दरबार में अब्दुर **रज्जाक** आया था। जिसका यात्रा विवरण मतला-ए-साहेन है। जो फारसी भाषा में लिखा गया। इस पुस्तक से विजयनगर का प्रशासनिक जानकारी मिलती है। इसी में लिखा है कि विजयनगर साम्राज्य में 300 बन्दरगाह थे।
- ☞ **मल्लिकार्जुन** — इसके समय संगम वंश का **पतन प्रारम्भ** हो गया। इसे **प्रौढ़ देवराय** कहा जाता है।
- ★ संगम वंश का अंतिम शासक **वीरूपाछन-II** था जिसकी हत्या **सालुव नरसिंह** ने कर दिया और संगमवंश के स्थान पर सालुव वंश की स्थापना कर दिया।
- ★ इस घटना की विजय नगर साम्राज्य के इतिहास में **प्रथम बलाहार** की घटना कहते हैं।

**Note –** विजय नगर साम्राज्य पर 4 वंशों ने शासन किया।

संगम वंश → सालुव वंश → तुलुव वंश → आरविडु वंश

**Trick :** संगम सतुआ

### सालुव वंश

- ★ इस वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था। इस वंश का अंतिम शासक **इम्माडि नरसिंह** था जिसकी हत्या **वीर नरसिंह** ने कर दिया और **सालुव वंश** के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना कर दिया।
- ★ इस घटना को विजय नगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलाहार की घटना कहते हैं।

### तुलुव वंश

- ★ संस्थापक-**वीर नरसिंह** था। जिसका पुर्तगाली गवर्नर अल्मोडा से अच्छा से सम्बन्ध था। इसने 1505 ई. में अल्मोडा के साथ घोड़े के लिए व्यापारिक संधि किया था।
- ★ 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गयी और अगला शासक कृष्ण देव राय बना [KDR]
- ☞ **कृष्ण देव राय** — यह तुलुव वंश का सबसे प्रतापि शासक था। इसने रायचूर दोआब पर अधिकार कर लिया।
- ★ इस उपलक्ष्य में उसने **आन्ध्र भोज** तथा **अभिनव भोज** की उपाधि धारण किया। इसने यमन राज स्थापनाचार्य की भी उपाधि धारण किया। यह एक विद्वान शासक था, जिसने **आमुक्त मालथत** नामक पुस्तक की रचना किया। यह पुस्तक तेलगु भाषा में था। इसने संस्कृत भाषा में **जामवटि कल्याणम्** नामक पुस्तक का रचना किया।
- ★ आमुक्त मालथत पुस्तक से विजयनगर के इतिहास का पता चलता है।
- ★ बाबर ने अपनी आत्मकथा (तुमुक-ए-बाबरी) में लिखा है कि दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली शासक उस समय कृष्ण देवराय थे।
- ★ कृष्णदेव राय ने नागलपुर शहर की स्थापना किया और वहां बिठूल स्वामी मन्दिर तथा हजार मन्दिर का निर्माण किया।
- ★ इसके समय इटली यात्री डोमिगी वापस आया था। तथा पुर्तगाली यात्री बारबोसा आया था।
- ★ इसका पुर्तगाली गवर्नर **अल्बुकर्क** के साथ अच्छा सम्बन्ध था। इसके दरबार में तेलगु भाषा के 8 प्रमुख विद्वान रहते थे जिन्हें संयुक्त रूप से **अष्टदिग्गज** कहते थे। इस अष्ट दिग्गज ने सबसे प्रमुख अल्सी पेडन्ना थे जिन्हें तेलगु भाषा का पितामह कहा जाता है। इन्होंने हरिकथा तथा मनुचरित नामक पुस्तक की रचना किया।
- ★ अष्टदिग्गज में दूसरे स्थान पर तेनाली राम थे जिनकी रचना पाण्डुरेण महामान है। यह मंत्री के पद पर भी थे और इन्होंने अन्ध विश्वास से जनता को दूर किया।
- ★ 1529 ई. में कृष्ण देव राय की मृत्यु हो गयी और अगला शासक अच्युतदेवराय बना। इसके समय पुर्तगाली यात्री तुनीज भारत आया। इसने प्रान्तों पर नियन्त्रण रखने के लिए महामण्डलेश्वर नामक पद बनाया। इसके समय से ही इस वंश का विखराव शुरू हो गया।
- ★ इस वंश का अंतिम शासक सदाशिव राव था। इसका सेनापति रामराय था रामराय ने शासन की सारी शक्ति अपने हाथ में ले लिया।

- ★ वह एक सम्राज्यवादी सेनापति था जिसने बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य [विजापूर, गोलकुण्डा, वरार, विदर, अहमदनगर] में फूट डालने की कोशिश किया। किन्तु इसके विपरित परिणाम हुआ। बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य में से वरार को छोड़कर शेष चारों ने मिलकर 1565 में विजय नगर पर हमला कर दिया। इस युद्ध को तालिकोटा का युद्ध कहा जाता है।
- ★ इस युद्ध ने विजयनगर साम्राज्य का अन्त कर दिया। युद्ध के मैदान में रामराय मारा गया।
- ★ सदाशिवराय ने अपना अगला सेनापति तिरुमल को बनाया। तिरुमल ने सदाशिवराय की हत्या कर दी और एक नया वंश आरविडू वंश की स्थापना कर दी।

### आरविडू वंश

- ★ इस वंश का संस्थापक तिरुमल था। यह वंश अधिक दिन तक शासन नहीं कर सका और इस वंश का अंतिम शासक रंगा-III को पराजित करके शिवाजी ने उसके क्षेत्र को मराठा साम्राज्य में मिला लिया।
- ★ विजयनगर साम्राज्य को तेलगु भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।

### विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था

- ★ विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी कृष्णदेव राय की रचना आमुक्त माल्य अब्दुर रज्जाक की रचना।
- ★ इस समय राजा अपने राज्याभिषेक के समय एक विशेष प्रकार का यह यज्ञ कराता था जिसे पट्टाभिषेक यज्ञ कहते हैं।
- ★ इसके समय पूरे साम्राज्य को-

राज्य (देश)

↓

प्रांत (मण्डल)

↓

जिला (कोट्टम)

↓

परगण (नाडू)

↓

गाँव (उर)

- ★ कृष्णदेव राय के समय प्रान्तों की संख्या 6 थी।
- ★ अच्युतदेव राय के समय प्रान्त का प्रशासन प्रान्तपति से लेकर महभिण्डलेश्वर नामक अधिकारी को दे दिया गया।
- ★ कृष्णदेव राय ने नायंवर व्यवस्था लाया। इसके तहत अधिकारियों को नगद वेतन के स्थान पर भूमि दिया जाता था। यह गुप्तकालिन सामन्ति व्यवस्था तथा दिल्ली सल्तनत के उक्त व्यवस्था के समान था।
- ★ इस समय सैनिकों को दान में दी गयी भूमि को अमर भूमि कहा जाता था तथा इस भूमि को प्राप्त करने वाले को अमरनायक कहा जाता था। मन्दिर के दान में दी गयी भूमि को देवभूमि कहा जाता था।
- ★ इस समय सैन्य विभाग को कदाचार कहा जाता था। भूराजस्व को सिरत कहते थे। और इस कर को वसूलने वाले अधिकारी को आथवन कहते थे। कर का मुख्य आधार कृषि था।
- ★ इस समय चार प्रकार के भूमि का प्रचलन था।

**सिंचित भूमि** - यह सबसे उपजाऊ भूमि थी। यहां बिना किसी सिंचाई साधन के ही अच्छी फसल होती थी। इस पर

सर्वाधिक Tax था।

**बगानी/बागाती भूमि** - इस भूमि पर बगानी कसब जैसे-मशाला की खेती होती थी। इस पर Tax सिंचित भूमि से कम था।

**उसर भूमि** - यह वैसी भूमि थी जिस पर प्रतिवर्ष कृषि नहीं होती थी। यह अधिकतर समय सूखा ग्रस्त रहता था। इस पर Tax कम था।

**जंगली या वनभूमि** - इस भूमि का अधिकतर भाग पर वन का विस्तार था। इस पर कृषि कार्य न के बराबर था। इस भूमि पर No tax था।

- ★ इस समय दासों को खरीद बिक्री के लिए वेसबाग नामक बाजार होता था।
- ★ विजयनगर की मुद्रा पगोडा थी।
- ★ इस समय महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी थी।
- ★ मनोरंजन के साधन के रूप में इस समय सतरंज का प्रचलन था।
- ★ इस समय मन्दिर निर्माण के क्षेत्र में प्रविण शैली का विकास अधिक हुआ।

### विजय-नगर काल में आये विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डे काण्टी	इटली	देवराय I
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय II
बार्थोमा	इटली	वीर नरसिंह
बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
डोमिंगोपाएस	इटली	कृष्णदेव राय
नुनिज	पुर्तगाली	अच्युतदेव राय

### बहमनी साम्राज्य

- ★ इसकी स्थापना हसन गंगु जिसका मूल नाम अलाउद्दीन बहमन शाह था ने मोहम्मद बिन तुगलक के समय 1347 ई. में किया।
- ★ हसन गंगू ने अपनी राजधानी गुलबर्गा को बनाया।
- ★ बहमनी राज्य की भाषा मराठी थी तथा इनकी मुद्रा हूड थी। हसन गंगू के बाद मोहम्मद प्रथम शासक बना। इसने रायचूर पर अधिकार के लिए बुक्का-I से युद्ध किया और युद्ध में विजय रहा।
- ★ इस वंश का अगला शासक फिरोजशाह बहमन बना। इसने भी रायचूर पर अधिकार कर लिया। विजयनगर शासक देवराय-I से युद्ध किया और युद्ध में विजयी रहा।
- ★ इस वंश का अगला शासक सिहाबुद्दीन था। सिहाबुद्दीन ने राजधानी गुलबर्गा से बीदर लाया। इसे संत अहमद के नाम से जाना जाता है।
- ★ इस वंश का अगला शासक अलाउद्दीन हूमायूँ बना। यह एक क्रूर शासक था। अतः इसे जालिम हूमायूँ कहा जाता है। इसके प्रधानमंत्री का नाम (वजीर) मोहम्मद गवाँ था। जो एक योग्य व्यक्ति थे। ये पत्रों का संग्रह करते थे। इनके पत्रों का संग्रह रियाजूल-इन्शा कहलाता है।



- ★ इस वंश का अंतिम शासक कलिमुल्ला था।
- ★ इसी के समय बहमनी साम्राज्य पांच भागों में बंट गया-  
(1) बीजापुर, (2) अहमदनगर, (3) बरार, (4) गोलकुण्डा तथा (5) बीदर
- ★ तालीकोटा का युद्ध में बहमनी वंश के चार राज्यों ने भाग्य लिया किन्तु बरार इसमें भाग नहीं लिया। इस युद्ध में विजय नगर साम्राज्य का अंत 1565 में हो गया।

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष	क्षेत्र
1. बरार	इमादशाही वंश	फतेहउल्लाह ईमाद	1484	महाराष्ट्र
2. बीजापुर	आदिल शाही वंश	यूसूफ आदिल खान	1489	कर्नाटक
3. अहमदनगर	निजाम शाही वंश	मालिक अहमद	1490	महाराष्ट्र
4. गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	1512	तेलंगाना
5. बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर अली बरीद	1526	कर्नाटक